मध्याह्न आरति

मध्याह्न आरति

– 1। पंचारती –

घेउनि(याँ) पंचारती करूँ बाबांसी आरती |
करूँ सायीसी आरती करू बाबांसी आरती || 1 ||

उठा उठा हो बांधव ओँवाळूँहा रमाधव |
सायी रमाधव ओँवाळूँह रमाधव || 2 ||

करूनिया स्थिर मन पाहूँ गंभीर हेँ ध्यान |
सायींचे हेँ ध्यान पाहूँ गंभीर हेँ ध्यान || 3 ||

कृष्णनाथा दत्तसायी जडो चित्त तुझे पायी |
चित्त बाबा पायी जडो चित्त तुझे पायी || 4 ||

– 2। आरती –

आरती सायिबाबा सौख्यदातार जीवा |
चरणरजतालीँ द्यावा दासाँ विसावा भक्ताँ विसावा ||
आरती सायिबाबा ||

जाळुनियाँ अनंग स्वस्वरूपीँ राहे दंग |
मुमुक्षुजनाँ दावी निज डोळाँ श्रीरंग डोळाँ श्रीरंग || 1
आरती सायिबाबा ||

जया मनी जैसा भाव तया तैसा अनुभव |
दाविसी दयाघना ऐसी तुझी ही माव तुझी ही माव || 2
आरती सायिबाबा ||

तुमचे नाम ध्याता हरे संसृति व्यथा |
अगाध तव करणी मार्ग दाविसी अनाथा दाविसी अनाथा || 3
आरती सायिबाबा ||

कलियुगीँ अवतार सगुण(पर)ब्रह्म साचार |
अवतीर्ण झालासे स्वामी दत्त दिगंबर दत्त दिगंबर || 4
आरती सायिबाबा ||

आठाँ दिवसाँ गुरुवारीँ भक्त करीति वारी |
प्रभुपद पहावया भवभय निवारी भय निवारी || 5
आरती सायिबाबा ||

माझा निजद्रव्यठेवा तव चरण रज सेवा |
मागणेँ हेँचि आताँ तुम्हाँ देवाधिदेवा देवाधिदेवा || 6
आरती सायिबाबा ||

इच्छित दीन चातक निर्मल तोय निजसुख |
पाजावेँ माधवा या संभाळ आपुली भाक आपुली भाक || 7

आरती सायिबाबा सौख्यदातार जीवा |
चरणरजतालीँ द्यावा दासाँ विसावा भक्ताँ विसावा ||
आरती सायिबाबा ||

– 3। जय देव जय देव –

जय देव जय देव दत्ता अवधूता |
(हो) सायि अवधूता |
जोडूनि कर तव चरणीँ ठेवितो माथा |
जय देव जय देव ||

अवतरसीँ तूँ येता धर्मातेँ ग्लानी
नास्तिकाँनाही तू लाविसी निजभजनीँ |
दाविसी नाना लीला असंख्य रूपाँनी
हरिसी दीनांचे तू संकट दिनरजनी || 1 ||

जय देव जय देव दत्ता अवधूता |
(हो) सायि अवधूता |
जोडूनि कर तव चरणीँ ठेवितो माथा |
जय देव जय देव ||

यवनस्वरूपी एक्या दर्शन त्वाँ दिधलेँ
संशय निरसुनियाँ तद्वैता घालविलेँ |
गोपीचंदा मंदा त्वांची उद्धरिलेँ
मोमिन वंशी जन्मुनी लोकाँ तारियलेँ || 2 ||

जय देव जय देव दत्ता अवधूता |
(हो) सायि अवधूता |
जोडूनि कर तव चरणींँ ठेवितो माथा |
जय देव जय देव ||

भेद न तत्त्वींँ हिंदू यवनांचा काँहींँ
दावायासि झाला पुनरपि नरदेही |
पाहसि प्रेमानेँ तू हिंदूयवनाँही
दाविसी आत्मत्वाने व्यापक हा सायी || 3 ||

जय देव जय देव दत्ता अवधूता |
(हो) सायि अवधूता |
जोडूनि कर तव चरणींँ ठेवितो माथा |
जय देव जय देव ||

देवा सायीनाथ त्वत्पदनत भावेँ
परमायामोहित जनमोचन झणिँ व्हावेँ |
त्वत्कृपयाँ सकलांचे संकट निरसावेँ
देशिल तरी दे त्वद्यश कृष्णानेँ गावेँ || 4 ||

जय देव जय देव दत्ता अवधूता |
(हो) सायि अवधूता |
जोडूनि कर तव चरणींँ ठेवितो माथा |
जय देव जय देव ||

– 4। शिरडी माझे पंढरपुर –

शिरडी माझेँ पंढरपुर | सायिबाबा रमावर |
बाबा रमावर | सायिबाबा रमावर || 1

शुद्ध भक्ती चंद्रभागा | भाव पुंडलिक जागा |
पुंडलिक जागा | भाव पुंडलिक जागा || 2

या हो या हो अवघे जन | करा बाबांसी वंदन |
सायीसी वंदन | करा बाबांसी वंदन || 3

गणू म्हणे बाबा सायी | धाँव पाव माझे आयी |
पाव माझे आयी | धाँव पाव माझे आयी || 4

– 5। घालीन लोटांगन –

घालीन लोटांगन वंदीन चरण
डोळ्यानीँ पाहिन रूप तुझेँ |
प्रेमेँ आलिंगिन आनंदेँ पूजिन
भावेँ ओवाळिन म्हणे नामा || 1 ||

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव |
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव || 2 ||

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतीस्वभावत् |
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि || 3 ||

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिं |
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचंद्रं भजे || 4 ||

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे |
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे || 5 ||

– 6। पुष्पांजलि –

श्रीगुरुदेव दत्त ||

हरिः ॐ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवा-
-स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् |
ते ह नाकं महिमानः सचंत
यत्र पूर्वे साध्या संति देवाः ||

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने
नमो वयं वैश्रवणाय कूर्महे |
स मे कामान् कामकामाय मह्यं
कामेश्वरो वैश्रवणो दधातु |
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ||

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं
पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं
समंतपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आँतादापरार्धात्
पृथिव्यैसमुद्रपर्यंतायाः एकराळिति ||

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो
मरुत्तस्यावसन् गृहे |
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ||

श्रीनारायण वासुदेवाय सच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ् महराज् की जै ||

– 7। नमस्काराष्टक –

अनंता तुला तेँ कसेँ रे स्तवावेँ
अनंता तुला तेँ कसेँ रे नमावेँ |
अनंता मुखांचा शिणे शेष गाताँ
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 1 ||

स्मरावेँ मनीँ त्वत्पदाँ नित्य भावेँ
उरावेँ तरी भक्तिसाठी स्वभावेँ |
तरावेँ जगा तारूनी मायताता
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 2 ||

वसे जो सदा दावया संतलीला
दिसे अज्ञ लोकाँपरी जो जनाँला |
परी अंतरी ज्ञान कैवल्यदाता
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 3 ||

बरा लाधला जन्म हा मानवाचा
नरा सार्थका साधनीभूत साचा |
धरूँ सायिप्रेमा गळाया अहंता
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 4 ||

धरावेँ करीँ सान अल्पज्ञ बाला
करावेँ आम्हाँ धन्य चुंबोनि गाला |
मुखीँ घाल प्रेमेँ खरा ग्रास आताँ
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 5 ||

सुरादिक ज्यांच्या पदा वंदिताती
शुकादिक ज्यांतेँ समानत्व देती |
प्रयागादि तीर्थेपदीँ नम्र होताँ
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 6 ||

तुझ्या ज्या पदा पाहताँ गोपबाली
सदा रंगली चित्स्वरूपी मिळाली |
करी रासक्रीडा सवेँ कृष्णनाथा
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 7 ||

तुला मागतोँ मागणेँ एक द्यावेँ
करा जोडितोँ दीन अत्यंत भावेँ |
भवी मोहनीराज हा तारिँ आताँ
नमस्कार साष्टांग श्रीसायिनाथा || 8 ||

– 8। ऐसा येयी बा –

ऐसा येयी बा | सायी दिगंबरा |
अक्षयरूप अवतारा |
सर्वहि व्यापक तूँ | श्रृतिसारा |
अनसूयात्रि कुमारा | बाबा येयी बा ||

काशी स्नान जप प्रतिदिवशीँ |
कोल्हापुर भिक्षेसी |
निर्मल नदि तुंगा जल प्राशी |
निद्रा माहुर देशीँ || 1
ऐसा येयी बा ||

झोळी लोंबतसे वाम करीँ |
त्रिशूल डमरूधारी |
भक्ता वरद सदा सुखकारी |
देशील मुक्ती चारी || 2
ऐसा येयी बा ||

पायी पादुका जपमाला |
कमंडलू मृगछाला |
धारण करिशी बा |
नागजटा मुकुट शोभतो माथाँ || 3
ऐसा येयी बा ||

तत्पर तुझ्या या जे ध्यानीँ |
अक्षय त्यांचे सदनीँ |
लक्ष्मी वास करी दिनरजनीँ |
रक्षिसि संकट वारूनि || 4
ऐसा येयी बा ||

या परिध्यान तुझेँ गुरुराया |
दृश्य करीँ नयनाँ या |
पूर्णानंदसुखेँ ही काया |
लाविसि हरिगुण गाया || 5

ऐसा येयी बा | सायी दिगंबरा |
अक्षयरूप अवतारा |
सर्वहि व्यापक तूँ | श्रृतिसारा |
अनसूयात्रि कुमारा | बाबा येयी बा ||

– 9। श्रीसायिनाथ महिम्न स्तोत्रं –

सदा सत्स्वरूपं चिदानंदकंदं
जगत्संभवस्थानसंहारहेतुं |
स्वभक्तेच्छयामानुषं दर्शयंतं
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 1 ||

भवध्वांत विध्वंस मार्तंड मीड्यं
मनोवागतीतं मुनिर्ध्यानगम्यं |
जगद्व्यापकं निर्मलं निर्गुणं त्वां
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 2 ||

भवांभोधिमग्नार्दितानां जनानां
स्वपादाश्रितानां स्वभक्तिप्रियाणां |
समुद्धारणार्थं कलौ संभवंतं
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 3 ||

सदा निंबवृक्षस्य मूलाधिवासात्
सुधास्राविणं तिक्तमप्यप्रियं तं |
तरुं कल्पवृक्षाधिकं साधयंतं
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 4 ||

सदा कल्पवृक्षस्य तस्याधिमूले
भवद्भावबुद्ध्या सपर्यादिसेवां |
नृणां कुर्वतां भुक्तिमुक्तिप्रदं तं
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 5 ||

अनेका श्रृता तर्क्य लीला विलासैः
समाविष्कृतेशान भास्वत् प्रभावं |
अहंभावहीनं प्रसन्नात्मभावं
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 6 ||

सतां विश्रमाराममेवाभिरामं
सदा सज्जनैः संस्तुतं सन्नमद्भिः |
जनामोददं भक्तभद्रप्रदं तं
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 7 ||

अजन्माद्यमेकं परं ब्रह्म साक्षात्
स्वयं संभवं राममेवावतीर्णं |
भवद्दर्शनात् संपुनीतः प्रभोऽहं
नमामीश्वरं सद्गुरुं सायिनाथं || 8 ||

श्रीसायीश कृपानिधेऽखिलनृणां सर्वार्थसिद्धिप्रद
युष्मत्पादरजः प्रभावमतुलं धातापि वक्ताऽक्षमः |
सद्भक्त्या शरणं कृतांजलिपुटः संप्रापितोऽस्मि प्रभो
श्रीमत्सायिपरेशपादकमलान् नान्यच्छरण्यं मम || 9 ||

सायिरूपधर राघवोत्तमं
भक्तकामविबुधद्रुमं प्रभुं |
माययोपहतचित्तशुद्धये
चिंतयाम्यहमहर्निशं मुदा || 10 ||

शरत्सुधांशुप्रतिमप्रकाशं
कृपातपात्रं तव सायिनाथ |
त्वदीय पादाब्ज समाश्रितानां
स्वच्छायया तापमपाकरोतु || 11 ||

उपासनादैवत सायिनाथ
स्तवैर्मयोपासनिना स्तुतस्त्वं |
रमेन्मनो मे तव पादयुग्मे
भृंगो यथाब्जे मकरंदलुब्धः || 12 ||

अनेक जन्मार्जित पापसंक्षयो
भवेद्भवत्पादसरोज दर्शनात् |
क्षमस्व सर्वानपराधपुंजकान्
प्रसीद सायीश (सद्)गुरो दयानिधे || 13 ||

श्रीसायिनाथचरणामृतपूतचित्ता-
-स्तत्पादसेवनरताः सततं च भक्त्या |
संसारजन्यदुरितौघ विनिर्गतास्ते
कैवल्यधाम परमं समवाप्नुवंति || 14 ||

स्तोत्रमेतत् पठेद्भक्त्या यो नरस्तन्मनाः सदा |
सद्गुरुसायिनाथस्य कृपापात्रं भवेद्ध्रुवं || 15 ||

– 10। प्रार्थना –

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधं |
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीप्रभो सायिनाथ ||

श्रीसच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ् महराज् की जै ||

राजाधिराज योगिराज परब्रह्म सायिनाथ् महाराज्
श्रीसच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ् महराज् की जै ||